24 जनवरी 2023

@shreephaljain news shreephaljainnews @ShreephalN
www.shreephaljainnews.com shreephaljainnews@gmail.com +91 83022 52987

श्रीफल जैन न्यूज

फोटो : संदीप सैनी

मार्बल नगरी में पंचकल्याण महापर्व की धूम

हजारों श्रावकों पर वात्सल्य जी की अमृत वर्षा

संपादकीय

पंचकल्याणक के पुण्य अवसर पर श्रीफल जैन न्यूज की पहल से जुड़िए...

किशनगढ़ में भव्य पंचकल्याणक आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के सानिध्य में हो रहा है। यह पंचकल्याणक, किशनगढ़ में दो मंदिरों का हो रहा है। मंदिर बनने के बाद वहां पर प्रतिष्ठित प्रतिमाओं को विराजमान किया जाएगा। इसकी व्यापक कवरेज श्रीफल जैन न्यूज़ कर रहा है। इस आयोजन से जुड़े घटनाक्रम के साथ-साथ इससे जुड़ी हर प्रक्रिया का धार्मिक महत्व भी हम बता रहे हैं। जैसे समाज के श्रावक गण उस मंदिर के माध्यम से अपने जीवन में कितना पुण्यार्जन करेंगे ? मंदिर बनाने की क्या आवश्यकता है ? मंदिर क्यों बनता है ? और मंदिर में पूजन पाठ अभिषेक दर्शन करने से क्या लाभ है ? इन सभी पर भी श्रीफल न्यूज़ ने धार्मिक शास्त्रों के अनुसार एक विश्लेषण तैयार किया है जो आप सबके सामने प्रस्तुत है। इसमें हमने वो सब बातें रखी हैं शास्त्र सम्मत है, मंदिर बनने से लेकर मंदिर में धार्मिक अनुष्ठानों के बारे में समस्त विधियां, जानकारियां ऐसी हैं जिन्हें पढ़कर ख़ास कर हमारी नई पीढ़ी को पंचकल्याणक की विधि और विधान की जानकारी मिलेगी और वो भी समझ पाएंगे कि पंचकल्याणक का क्या महत्व है। सभी बातें हमें हमें धर्म शास्त्र के अनुसार हर ग्रंथों में जो मिली हैं। उम्मीद है कि श्रीफल जैन न्यूज़ के पाठकों को यह प्रयास हमारा अच्छा लगेगा। अगर आपको भी यह पाठ्य सामग्री, पठनीय लगी हो या अन्य कोई सुझाव हो तो हमारे मोबाइल नंबर 9591952436 पर हमें अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दीजिएगा।

जय जिनेन्द्र

दीपक जैन
ग्रुप संपादक, श्रीफल

SCAN ME

इस QR Code को स्कैन कर जुड़ें श्रीफल जैन न्यूज़ के Youtube Channel से

किशनगढ़। धर्मनगरी किशनगढ़ की धरा पर अब तक तीन जैन मंदिरों के भव्य पंचकल्याणक महोत्सव के आयोजन हो चुके हैं। पिछला पंचकल्याणक महोत्सव 2015 में 19 से 23 अप्रैल को हुआ था। इसके साढ़े 8 साल बाद वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ के कदम किशनगढ़ की धरा पर पड़े है।

आचार्यश्री 5वीं बार इंदिरा नगर स्थित शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर एवं सिटी रोड स्थित चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर में नवनिर्मित मान स्तंभ की प्रतिमाओं के पंचकल्याणक महोत्सव के लिए यहां मंगलप्रवेश कर चुके हैं।

1979 में हुआ था पहला पंचकल्याण महोत्सव

मार्बलनगरी की धरती पर सबसे पहला पंचकल्याण महोत्सव वर्ष 1979 में आदिनाथ मंदिर का हुआ था। इसमें आचार्य विद्यासागर महाराज का सान्निध्य मिला था। इसके बाद वर्ष 1984 में रूपनगढ़ रोड स्थित मुनि सुव्रतनाथ मंदिर के पंचकल्याणक महोत्सव में जैन धर्मावलंबियों को आचार्य धर्मसागर महाराज का सामीप्य हासिल हुआ था। तीसरा पंचकल्याणक वर्ष 2014 में शिवाजीनगर पार्श्वनाथ जैन मंदिर का आयोजित हुआ था। इस दौरान वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ का चातुर्मास यहीं पर होने के कारण जैन समाज को उनकी सहभागिता हासिल हुई थी।

भव्य पंचकल्याणक के लिए 22 कमेटियां कर रही अहर्निश कार्य

अब यहां चौथे भव्य कल्याणक महोत्सव में पूरा किशनगढ़ शहर रोशनी से सजा है, जगह-जगह स्वागत द्वार बनाए गए हैं। मुनि सुव्रतनाथ दिगंबर जैन पंचायत के तत्वावधान एवं वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में 22 से 27 जनवरी तक श्रीमद् जिनेंद्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हो रहा है। आचार्यश्री के साथ ही गणिनी आर्यिका सरस्वती माताजी ससंघ का भी मंगल प्रवेश हुआ। आयोजन के लिए 22 कमेटियां निरंतर अपना काम कर रही हैं।

व्यापक रूप से की गई हैं आवास व्यवस्थाएं

आयोजन में प्रदेशभर से समाज के लोग किशनगढ़ पहुंचेंगे। इनकी आवास व्यवस्था अतिथि आवासगृह, आरजू पैलेस, धर्मसागर भवन, धर्मसागर स्कूल, बाहेती धर्मशाला, जैन भवन, कुमावत भवन, चंद्रप्रभु भवन समेत होटलों व धर्मशालाओं में की गई है। जबकि, भोजन व्यवस्था सूरजदेवी पाटनी सभागार, मंडप में की गई हैं।

कार्यक्रम के तहत 22 जनवरी को घट यात्रा के साथ ही महोत्सव का आगाज हुआ। महोत्सव के तहत 22 जनवरी को गर्भ कल्याणक पूर्वार्द्ध में सवेरे 6 बजे नांदी मंगल अनुष्ठान, व्रतदान विधि, घटयात्रा महोत्सव, भूमि सिद्धि, श्रीजिन स्थापना, सवेरे 9 बजे ध्वजारोहण, मंडप उद्घाटन, चित्र अनावरण, दीप प्रज्जवलन, मंगल कलश स्थापना, आचार्य निमंत्रण, अतिथि सत्कार, प्रवचन सभा, दोपहर एक बजे सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा, मंडप प्रतिष्ठा, अंकुरारोपण, जाप्यारंभ, श्री जिनाभिषेक, यागमंडल पूजा, शाम 7 बजे आरती, साढ़े 7 बजे शास्त्र सभा और रात 8 बजे गर्भ कल्याणक नाटकीय उत्सव पूर्व रूप का आयोजित किया गया।

23 जनवरी को गर्भ कल्याणक उत्तरार्द्ध

23 जनवरी को गर्भ कल्याणक उत्तरार्द्ध, 24 को जन्म कल्याणक महोत्सव, 25 को तप कल्याणक महोत्सव, 26 को केवल ज्ञान कल्याणक महोत्सव व 27 जनवरी को मोक्ष कल्याणक महोत्सव का आयोजन होगा।

आयोजन को सफल बनाने वाले ये हैं संगठन और प्रबुद्ध लोग

आयोजन को सफल बनाने में चंद्रप्रभु महिला मंडल, पारसनाथ महिला मंडल, णमोकार महिला मंडल, अग्रसेन महिला मंडल, चेतना जागृति महिला मंडल, मुनिसुव्रतनाथ महिला मंडल, सुज्ञान महिला मंडल, महिला महासमिति, धर्म सागर स्कूल प्रबंधन, पारसनाथ महिला मंडल तेली मोहल्ला, पुलक मंच, दिगंबर जैन महासमिति, दिगंबर जैन महासभा, इंदिरा नगर जैन समाज, महावीर महिला मंडल समेत जैन समाज के लोग जुटे हुए है।

जो जिन मंदिर में उत्साह से भक्तिभाव करते हैं, वो स्वर्ग में भी परम उत्सव मनाते हैं

निर्मल भाव से की गई पूजा ही पापों का नाश करती है। कमल, केतकी,गुलाब आदि सुगंधित फूलों से पूजा करने वाला स्वर्ग में पुष्पक विमान में जन्म लेता है और मनोवांछित फल को भोगता है। धूप से पूजन करने वाला सुगंधित शरीर को प्राप्त होता है। दीपक से पूजन करने वाला देवों ज्योतिवान शरीर को प्राप्त करता है। छत्र, चमर, झालर, घंटा, ध्वजा आदि मंगल द्रव्य चढ़ते है, मंदिर को सजाते है वह अनेक धन्य, धान सहित अनेक विभूति को प्राप्त करते हैं। जल आदि द्रव्य से पूजन करने वाला स्वर्ग में सुंदर-सुंदर अप्सराओं के पति होते हैं। मंदिर की मयूर पंख से सफाई पाप मल से दूर हो जाते है और आरोग्यता को प्राप्त करते हैं। जो भक्ति से गीत,नृत्य, बाजो से जिन मंदिर में उत्सव करते हैं वह स्वर्ग में परम उत्सव को प्राप्त होता है।

मंदिर हैं समवसरण के प्रतीक

मंदिर, समवसरण का प्रतीक हैं। समवसरण में भगवान का मुख चारों दिशाओं में दिखाई देता है। अतः सब और से भगवान के दर्शन हो जाएं, इसलिए प्रदिक्षण (परिक्रमा) देते हैं। जन्म, मरण, जरा से छुटकारा मिले अथवा रत्नत्रय की प्राप्ति हो इसलिए तीन प्रदक्षिणा देते हैं। मकान और मंदिर में विशेषता अंतर दिखाने के लिए शिखर का निर्माण किया जाता है। शिखर का आकार पिरामिड के समान होता हैं, जिससे ध्वनि तरंगें एकत्रित होती हैं। शिखर के नीचे बैठकर जाप, पाठ करने से मन में शांति मिलती है। जितनी दूर से शिखर दिखने लगता है उतनी दूर से हमारे भाव शुद्ध होने लग जाते हैं।

मंदिर में घंटा, अक्षत, प्रदक्षिणा, शिखर का महत्व

मंदिर समवसरण का प्रतीक हैं। समवसरण में देवगण दुंदुभि बजाते है अतः दुंदुभि का प्रतीक होने से घंटा बजाया जाता है। दूसरा कारण यह भी है की घंटा बजाने से जो ध्वनि तरंगें उत्पन्न होती है. वें वहां के वातावरण को निर्मल बनाती हुए हमारे मन में शांति प्रदान कराती है। चावलों के ऊपर का छिलका अलग हो जाने से अंकुरण शक्ति समाप्त हो जाती। उसी प्रकार हे भगवान ! हमारा जन्म -मरण भी समाप्त हो जावे एवं हम भी चावलों जैसे उज्जवल अखंड बन जानें इस भावना से चावल चढ़ाते हैं।

श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक महोत्सव के लिए श्रद्धानवत किशनगढ़

एक सप्ताह से बह रही है धर्म की गंगा, दूर दूर से गोते लगाने आ रहे हैं श्रावकगण

किशनगढ़। किशनगढ़ की धरती पर भगवान श्री जिनेन्द्र की जय-जयकार हो रही है। इसके लिए पूरे किशनगढ़ को उत्तर से दक्षिण व पूरब से पश्चिम तक दुल्हन की तरह सजाया गया है। शाम होते ही किशनगढ़ के पंच कल्याण महोत्सव पर सजे किशनगढ़ को देखने के लिए श्रद्धा का सैलाब उमड़ रहा है। हर जाति धर्म का प्राणी इस ऐतिहासिक पर्व का साक्षी बनने को आतुर है। अपने आराध्य को स्थापित करने को लेकर पूरा दिगबंर जैन समाज एका के साथ कंधा से कंधा मिलकार धर्म प्रभावना करने में लगा है। सुबह से लेकर देर रात्रि तक धर्म की बयार में बहने के लिए भक्त भक्तिभाव से समाए हुए है।

मन-भावन शाही शोभायात्रा

श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन पंचायत व सकल दिगम्बर जैन समाज की ओर से आयोजित श्रीमद जिनेन्द्र पंचकल्याणक महोत्सव के शुभारंभ पर ऐतिहासिक घटयात्रा निकाली गई। अजमेर रोड स्थित डाक बंगले से रवाना हुई यात्रा में विभिन्न क्षेत्रों से जैन समाज के लोग उमड़े। घटयात्रा में जहां 1008 महिलाओं ने कलश धारण कर यात्रा को ऐतिहासिक बनाया वहीं शाही लवाजमे और हाथी-घोड़ा व रथ के साथ निकली यात्रा के स्वागत में जगह-जगह पुष्पवर्षा की गई। वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री वर्धमान सागर महाराज ससंघ के सानिध्य एवं गणिनी आर्यिका सरस्वती माताजी ससंघ की मौजूदगी में यात्रा के क्रिस्टल पार्क के पास वर्धमान सभागार पहुंचने पर महोत्सव का विधिवत ध्वजारोहण कर महोत्सव का शुभारंभ किया गया। यात्रा के दौरान ना केवल जैन समाज अपितु छत्तीस कौम के लोग जैन समाज के साथ कंधा से कंधा मिलकार चल रहे थे। श्रीमद जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के शुभारंभ के पहले दिन गर्भकल्याणक पूर्वाद्ध पर नांदी मंगल अनुष्ठान, सौधर्म इंद्र सहित सभी इंद्र परिवार द्वारा की गई। बाद में श्रीजी को सोने व चांदी के तीनों रथ में विराजित किया गया। पंच कल्याण महोत्सव न केवल राजस्थान अपितु देश का पांचवा सबसे बड़ा ऐतिहासिक कार्यक्रम है सवा सौ वर्ष बाद किशनगढ़ में इसका आयोजन किया जा रहा है। आचार्यश्री वर्धमान सागर महाराज को जैन आर्मी सेना की ओर से 5 तोपों की सलामी देकर नमन किया गया।

मनहर प्रवचनों की पावन वर्षा

वर्धमान सभागार में गर्भकल्याणक पूर्वाद्ध पर प्रवचन देते हुए आचार्यश्री ने कहा कि सुख केवल मनुष्य भव में प्राप्त होता है जो नाश नहीं हो सकता है। हमें तीर्थंकर प्रभु की शरण प्राप्त करनी चाहिए। जिन धर्म जिनेंद्र देव की शरण में आने से हमें सुख, हित और आनंद मिलता है। तीर्थंकर प्रभु ने भी मनुष्य पर्याय को प्राप्त करके सिद्ध पद को प्राप्त किया है इसलिए जिन धर्म और जिन शासन हितकारी व देने वाले है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में पाषाण और धातु की प्रतिमा में जिनत्व की स्थापना की जाती है इसलिए सभी को अपनी शक्ति और सामर्थ्य अनुसार परिणामों को निर्मल बनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पंचकल्याणक मनोरंजन के साधन नहीं है, इससे हमें मन की स्थिरता को प्राप्त कर जिन धर्म और उसके नियम को समझना चाहिए। जो सुख देता है धर्म रूपी अनुष्ठान में धर्म को समझकर सुखी बनने का प्रयास करना चाहिए।

मंदिर में 107 प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा

किशनगढ़ के इतिहास में जैन समाज के प्रथम जैन मंदिर चन्द्र प्रभु दिगबंर जैन मंदिर में आचार्य श्री व संघ के सानिंध में 107 जैन प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा विधि विधान से की जाएगी। मालूम हो इस मंदिर के पुर्ननिर्माण के लिए शिलान्यास कार्यक्रम गणिनी आर्यिका स्यादवाद मति माता जी के सानिध्य में 13 अप्रैल 2013 को की गई। मंदिर 1956 से रजिस्टर्ड है। मंदिर निर्माण पर करीब 14 करोड़ खर्च किए गए है। यह स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। 11 मंत्र शास्त्र के ज्ञाता इनकी प्राण प्रतिष्ठा कराने में जुटे है।

जानिए पंच कल्याणक का विधान

श्रीफल जैन न्यूज पर
ब्रम्हचारी जय निशांत का आलेख

पंच कल्याणक का उद्देश्य यह है कि जिन भगवान की प्रतिष्ठा करना चाहते हैं। उन भगवान की प्रतिमा बनाने के पूर्व पाषाण का शोधन होना चाहिए। पात्रों की शुद्धि होनी चाहिए। इंद्रों की प्रतिष्ठा संयम के अनुसार करते थे। आज वर्तमान में अर्थ प्रधान हो गई पूरी व्यवस्था. पात्रों का सही चयन नहीं कर पाते हैं। माता पिता, आहार दाता बिना संयम शोधन से बन रहे हैं. ये सभी पात्र संयमित होने चाहिए।

मंत्र के जानकार हों प्रतिष्ठाचार्य

प्रतिष्ठाचार्य मंत्र शास्त्र के जानकार हों। वर्तमान में केवल शाब्दिक क्रिया हो रही हैं, भावनात्मक क्रियाएं नहीं हो रही हैं। प्रतिष्ठा में प्रतिमा को संस्कारित किया जाता है। इसमें तीन चीजें मुख्य हैं पहला मंत्र, दूसरा यंत्र, तीसरा तंत्र।सभी मंत्रों की 108 जाप विधिवत होनी चाहिए।

यंत्र के साथ मंत्र भी क्रियाएँ अनिवार्य

यंत्र के साथ मंत्र की क्रियाएं होनी चाहिए। मात्रिका यंत्र, सुरेन्द्र यंत्र, वर्धमान यंत्र, बोधी-समाधि, नयनोंमीलन, सिद्धचक्र यंत्र, मोक्षमार्ग यंत्र, निर्वाणसंपत्ति यंत्र, जलमंडल यंत्र, अग्निमंडल यंत्र, आकाशमंडल यंत्र का प्रयोग होता है। ये सभी यंत्र प्रतिमा की प्रतिष्ठा में प्रयोग होते हैं।

तंत्र क्रिया में ये होता है विशेष

जल से शोधन, विभिन्न प्रकार के क्वाथ.काढ़े होते हैं। पंच छल्ल क्वाथ, पंच फल क्वाथ, सर्वोषधि क्वाथ, धूली कलश क्वाथ से बिम्ब शुद्धि, उवटन, केशर के माध्यम से गर्भ शोधन एवम गभ संस्कार प्रत्येक तीर्थकर का गर्भावतरण, अलग-अलग होना चाहिए। कुछ लोग एक साथ एक वस्त्र में कर देते हैं।

जानिए क्या होता है जात कर्म में

रूचकवर द्वीप की 40 कन्याएँ आकर क्रिया संपन्न करती हैं। इसी क्रिया के बाद शचि प्रसूति गृह में आती हैं . पांडूकशिला पर सौधर्म के साथ पहुंची हैं। पांडूकशिला पर 1008 कलशों से 1008 गुणों का आरोपण करते हैं। सहस्त्रनाम पाठ करते हुए एक हजार गणों का आरोपण होता है। अमृत स्थापन होता है। तीर्थंकर बालक कभी भी मां के दूध पर निर्भर नहीं होते हैं। अमृत चूस कर बड़े होते हैं।यहां मध्यलोक की कोई चीज ग्रहण नहीं करते हैं। भोगों की सारी सामग्री स्वर्ग से सौधर्म लेकर आता है। तीर्थकंर के साथ बाल क्रीडा करने भी देव आते हैं।

ऐसे होते हैं तीर्थंकर

तीर्थंकर किसी के सामने झुकते नहीं, किसी को नमस्कार नहीं करते . देव या साधु दर्शन नहीं करते हैं। स्वयं बुद्ध होते हैं। ज्ञान से विदेह क्षेत्र की रचना अनुसार नगर की संयोजना करते हैं। और अपने पुत्रों को शिक्षा देते हैं। अन्य गुणों को भी सीखाते हैं। दीक्षा धारण करते हैं। दीक्षा विधि में भी संस्कारों की अलगअलग व्यवस्थाएं हैं पिच्छी कमंडल देते हैं। अंग न्यास करते हैं संस्कार रोपण करते हैं। दीक्षा क्रिया ऐसे संपन्न होती है। आहार का कोई विधान शास्त्रों में नहीं है।

ऐसे होती है दीक्षा प्रक्रिया

दीक्षा के बाद गुणस्थान का आरोहण करते हैं, केवल ज्ञान क्रिया में इसकी पूरी विधि है। अधिवासना में कई चीजें हैं। जैसे पंचवाण स्थापित करना, यवमाला मदन फल स्थापित करना, पंच वर्ण चूर्ण स्थापित करना, नयनोन्मिलन काजल से करते है इसका प्रमाण नहीं मिलता। इसका द्रव्य अलग से बनाते हैं इसके बाद सूर्य कला, चन्द्र कला, प्राण प्रतिष्ठा एवं सूरी मंत्र द्वारा केवलज्ञानोत्पत्ति करते हैं फिर समोशरण रचना के बाद पूजा होती है। अंत में निर्वाण कल्याणक में संस्कार आरोपण है। गजरथ होता है बुंदेलखंड में वह चल जिनालय का प्रतीक है। हवन और आहुति होती हैं। पांच दिन में दो लाख जाप हो जाते हैं। यागमंडल विधान में, त्रिकाल चौबिसी, विद्यमान तीर्थंकर और आचार्य, उपाध्याय परमेष्ठी, साधु परमेष्ठी, आदि की उपासना को कहा गया है। अन्य शास्त्रों में देवी, यक्षिणी, माता इत्यादि की पूजा होती है। प्रतिष्ठा तिलक, प्रतिष्ठासरोदधार जयसेन स्वामी प्रतिष्ठा पाठ के अनुसार अष्टकुमारियां ऋतुस्त्राव से पहले की होती हैं। अष्टद्रव्य - रजत द्रव्य - चांदी के फूल, स्वर्ण पुष्प, उवटन द्रव्य प्रयुक्त होते हैं।

किशनगढ़ में पंचकल्याणक की धूम

सांसद भागीरथ चौधरी ने बताया एतिहासिक अवसर

श्रीफल जैन न्यूज़ से एक्सक्लूसिव चर्चा में अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी ने कहा कि किशनगढ़ में दो मंदिरों में पंचकल्याणक महोत्सव को पूरे अजमेर संभाग के लिए बड़ा अवसर मानते हुए भागीदारी ने सम्मेद शिखर व धार्मिक विषयों पर श्रीफल जैन न्यूज़ की जमकर सराहना की। मेरा जन्म भले ही जाट जाति में हुआ लेकिन मैं स्वयं 28 वर्ष से शाम को जल्दी भोजन करने के नियम का पालन करता हूँ। **पढ़िए विस्तार से...**

किशनगढ़ में जैन समाज का इतना बड़ा आयोजन हो रहा है। क्षेत्रीय सांसद होने के नाते क्या कहना चाहेंगे ?

देखिए, जैन कोई जाति नहीं बल्कि एक जीवन पद्धति है। जियो और जीने दो के सिद्धान्त को पूरी दुनिया मानती है। मैं स्वयं जाति से जाट हूँ लेकिन मैं २८ साल से शाम को जल्दी भोजन करने के नियम का पालन करता हूँ।मुझे तो जैन साधु-संतों का बहुत सानिध्य मुझे मिला है। किशनगढ़ के लिए यह मौक़ा एतिहासिक है। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी यहां पधारे हैं। सभी जैन ही नहीं बल्कि अ-जैन समाज के सभी लोगों के लिये यह एक उत्सव है। किशनगढ़ असल में उत्सव मना रहा है।

क्या ऐसे बड़े धार्मिक आयोजन, क्षेत्रीय विकास में भी सहायक होते हैं?

आचार्य वर्धमान सागर जी जैसे बड़े संत हमारे यहां आए हैं। ये सर्वांगीण विकास का मौक़ा है। बिजली,पानी,सड़क जैसी सुविधाएँ ही नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र के लोगों में आध्यामिकता के विकास का ये सुअवसर आया है।

जैन समाज की भूमिका को किस रूप में देखते हैं आप ?

मैं हमेशा कहता हूँ कि जैन जाति नहीं बल्कि जीवन का दर्शन है। कोई भी व्यक्ति जैन समाज जैसा जीवन व्यतीत करता है वो जैनी है। अगर कोई जैन समाज में पैदा होकर भी जैन परंपरा अनुरूप आचरण नहीं करता वो उसे जैन नहीं कह सकते। इसीलिए जैन समाज का मतलब जीवन जीने का तरीक़ा, जीवन का दर्शन है। जैन समाज हमेशा राष्ट्रीयता की भावना से साथ जुड़ा रहता है। जैन समाज, अपने और अपने समाज के लिए नहीं अपितु संपूर्ण देश और संपूर्ण विश्व के कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है। संघर्ष,उद्यम और परोपकार, तीनों में जैन समाज के लोगों का कोई सानी नहीं।

सम्मेद शिखरजी को लेकर चल रहे श्रीफल जैन न्यूज़ के अभियान मत निर्माण को लेकर क्या कहेंगे, क्या होना चाहिए ?

सम्मेद शिखरजी से पूरे देश के जैन समाज की आस्था जुड़ी हुई है। श्रीफल जैन न्यूज ने इस विषय को जिस तरह से उठाया है वो प्रभावित करने वाला है। अभी कल ही सांसद अर्जुनराम मेघवाल जी का आना हुआ था, जिसमें आचार्य श्री वर्धमान सागर जी से हमारा संवाद हुआ और सम्मेद शिखरजी को लेकर प्रधानमंत्री मोदी ने पूरा आश्वासन दिया है। जैन समाज की भावनाओं के अनुरूप यहां काम होगा। श्रीफल जैन न्यूज जैन समाज में पंरपरा,धार्मिक क्रियाकलापों की करवेज के साथ जिस तरह से समसामयिक विषयों को उठा रहा है, मैं बहुत प्रभावित हूँ।

जिनेन्द्र भगवान की प्रतिदिन पूजन करने वालों को मिलता है मोक्ष

जो जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा विराजमान करता और प्रतिदिन पूजन,अभिषेक करता है। वह देव,मनुष्य गति के उत्तम उत्तम सुखों को भोगकर तीर्थंकर पद को प्राप्त और मोक्ष को प्राप्त करता है। व्रत,विधान,तप,दान आदि शुभ क्रिया से जितना पुण्य होता है। उसे कही अधिक पुण्य जिन प्रतिमा विराजमान करने से होता है और वह परम्परा से सिद्ध अवस्था को प्राप्त करता है। जो भव्य जीव जिन मंदिर पर शिखर बनवाता हैं। कलश चढ़ाता वह इंद्र, धरणेंद,चक्रवर्ती और संस्कार के समस्त सुख को प्राप्त करता हुआ अंत में मोक्ष को प्राप्त करता है। नए चैत्यालय बनाकर उसमें जिन प्रतिमा विराजमान कर पंच कल्याणक प्रतिष्ठा करवाते है वह तीन लोग के प्रतिष्ठा को पाते हैं। जो सिद्धक्षेत्र तीर्थक्षेत्रों की यात्रा करते हैं वे अपने मनुष्य जन्म को सफल करते हैं। अपनी विभूति प्रमाण जिनामंदिर बनवा कर जल, चंदन आदि अष्ट द्रव्यों से पूजन करते कराते है। जो जिनमंदिर में धन खर्च करते हैं। वे स्वर्ग एवं मनुष्य में अत्यंत महाभोगों को भोगकर पुनः मनुष्य हो महाव्रतों को पालन कर परम पद को प्राप्त करते हैं।

प्रतिमा दर्शन से अनेक उपवासों का मिलता है फल

भगवान के दर्शन करने से सम्यक की प्राप्ति होती है। यदि सम्यकदर्शन है तो वो और दृढ़ होता है। गौतम गणधर को महावीर के दर्शन से सम्यगदर्शन प्राप्त हुआ था। भगवान के दर्शन से मन के अशुभ भाव नष्ट होते है, कषाय कम होती है। असंख्यात गुणी कर्मो की निर्जरा होती है। अनेक उपवास का फल मिलता है। पुण्यास्त्रव होता है तथा वीतरागता प्राप्त करने की भावना दृढ़ होती है। सुबह दर्शन करने से पूरे दिन के लिए ऊर्जा मिलती है। भाव निर्मल होता है। शत्रु से भी मैत्री करने के भावों का जन्म होता है। स्वर्ग और मोक्ष का साधन है। राजा,चक्रवर्ती,तीर्थंकर आदि पद की प्राप्ति भी जिनेन्द्र दर्शन से होती है। कथा है कि एक मेंढक समवसरण जिनेंद्र भगवान के दर्शन के भाव से जा रहा था और रास्ते में वह हाथी के पैर के नीचे दब कर मरा, तो स्वर्ग में गया। यह सिर्फ दर्शन मात्र के भाव से ही हो गया। मंदिर पहुंचने से पहले मन में किया। दर्शन का भाव उसे स्वर्ग हुआ मात्र दर्शन की भाव से वहां पहुंचा भी नही था। जो जिनेन्द्र भगवान को अपने हृदय में धारण करता है। वह सब प्रकार के ग्रह,नक्षत्र आदि शुभ फल ही देते हैं और अशुभ स्वप्न,शकुन आदि भी शुभ फल देते हैं।

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव :

सुरक्षा के लिहाज से 100 पुलिसकर्मियों का लगाया जाप्ता, सीसीटीवी कैमरे से पुलिसकर्मी कर रहे निगरानी ताकि हर गतिविधि पर नजर रखी जा सकें

किशनगढ़। शहर में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आगाज हो चुका है। लंबे अर्से बाद हो रही प्रतिष्ठा महोत्सव के तहत पुलिस प्रशासन की तरफ से भी पूरी निगरानी की जा रही है। इस प्रतिष्ठा महोत्सव को देखने के लिए हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। जैन समाज की तरफ से व्यापक तैयारियां की गई है। कानून व्यवस्था व सुरक्षा के लिहाज से पुलिस प्रशासन का पूरा सहयोग मिल रहा है। डीएसपी मनीष शर्मा ने बताया कि पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए शहर में कुल 10 प्वाइंट ट्रेफिक के हिसाब से चिन्हित किए गए है। जहां पुलिस बल मुस्तैद है। शोभायात्रा समेत आयोजन में 100 से ज्यादा पुलिस कर्मी तैनात हैं और सुरक्षा के लिए कैमरे लगाए गए है। लगाए गए कैमरों के एक्सेस प्वाइंट से पुलिस कर्मी द्धारा निगरानी कर रहे हैं। ताकि हर गतिविधि पर नजर रखी जा सकें। चिन्हित किए गए ट्रेफिक प्वाइंट पर पुलिस का अतिरिक्त जाब्ता लगाया गया।

हर दिन बनेगी करीब 15 हजार लोगों की रसोई

जयपुर। वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के सान्निध्य में मदनगंज किशनगढ़ में आयोजित हो रहे इस पंचकल्याणक महोत्सव में प्रतिदिन 15 से 20 हजार लोगों की रसोई बनेगी। सामान्य श्रद्धालओं के लिए एक समय नाश्ता और दो समयभोजनकेअलावात्यागीव्रतियोंऔरजो श्रद्धालु सोध का भोजन करते हैं उनके लिए अलग व्यवस्था की गई है। यहां छः अलग अलग भोजजनशाल बनाई गई है और आने वाले सभी लोगों का पूरा ध्यान रखा गया है।

मदनगंज किशनगढ अपने सुस्वादु भोजन के लिए पूरे देश में जाना जाता है और यही बात यहां आयोजित हो रहे इस भव्य पंचकल्याणक महोत्सव में नजर आएगी। महोत्सव के दौरान प्रतिदिन यहां आने वाले यात्रियों और श्रद्धालुओं के लिए अलग-अलग तरह के भोजन की व्यवस्था की गई है और प्रयास यह किया गया है कि

एक तरह का भोजन दूसरी बार रिपीट ना हो, यानी हर बार लोगों को नए तरह के भोजन मिले।

प्रतिदिन औसतन करीब दस हजार लोगों के भोजन की व्यवस्था रहेगी ताकि यहां जो आए, वह धर्म का आनंद तो ले ही साथ ही भोजन का आनंद भी ले।

यह बनेगी रसोई

प्रतिदिन नाश्ते में चाय, दूध, उकाली, फल, बिस्किट, पोहा, नमकीन जैसे आइटम्स के साथ ही हर रोज कोई ना कोई मिठाई जैसे बादाम का हलवा, केसर बाटी, गुलाब रबडी, गाजर का हलवा, जलेबी, इमरती, राजभोग जैसे मिठाइयां भी परोसी जाएंगी।

इसी के साथ सुबह व शाम के भोजन में पूडी, चपाती, चावल, दाल के साथ ही हर रोज अलग सब्जियां जैसे मटर, टमाटर, हरा छोला, काजू करी, शाही पनीर, मलाई कोफ्ता जैसी सब्जियां रहेंगी। वहीं मिठाइयों में गुलाब जुमान और बादाम के हलवे से लेकर मालपुआ, लडडू, घेवर आदि कई तरह की मिठाइयां परोसी जाएंगी।

भोजन परोसने के लिए विभिन्न महिला मंडलों और स्वयंसेवकों को जिम्मेदारी दी गई है और करीब 500 लोग इस व्यवस्था को संभालेंगे। और भोजन पूरी शुद्धता के साथ बने इसका पूरा ध्यान रखा गया है।

जो लोग सोध का भोजन करना चाहते हैं, उनके लिए पूरी तरह से अलग व्यवस्था आर के मार्बल परिवार के गेस्ट हाउस में की गई है। वहां पूरी शुद्धता के साथ कुएं के छने और उबाले हुए जल से भोजन बनाया गया जाएगा। इस के अलावा त्यागी व्रतियों, इंद्र - इंद्राणियों और अन्य श्रद्धालुओं के लिए भी अलग व्यवस्था की गई है।

समिति का कहना है कि हमारी कोशिश यही है कि किसी को भी किसी तरह की परेशानी ना हो।

जानिए क्यों होते हैं तीर्थंकर

ऐसे सम्यग्दृष्टि पुरुष, जो संसार रूपी महासागर में पड़े हुए जीवों को उठाकर अपनी आत्मा के शुद्ध स्वरूप में स्थापन करने के लिए प्रयत्न करते रहते हैं। ऐसे पुरुष तीर्थंकर होने योग्य पुण्य प्रकृति का बंध करते हैं। तीर्थंकर होने का अर्थ क्या है ? विस्तारपूर्वक पढ़िए ...

जो पुरुष शुद्ध सम्यग्दृष्टि के होते हैं यानि सभी को एक समान दृष्टि से देखते हैं। सोलह कारण भावनाओं का चितवन करते रहते हैं और जो समस्त जीवों के दुःखों को दूर करने की तथा सबको मोक्ष प्राप्त करा देने की भावना रखते हैं ऐसे जीवों के तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है।

अपने सम्यग्दर्शन को निर्मल रखना, पंच परमेष्ठियोंकी विनय करना शील और व्रतोंको अतिचार रहित पालन करना, निरंतर ज्ञानका अभ्यास करना, संसारसे भयभीत रहना, शक्ति के अनुसार तप करना, शक्ति के अनुसार दान देना, साधुओं की सेवा करना, वैयावृत्य करना, अरहंतदेवकी भक्ति करना, आचार्य परमेष्ठीकी भक्ति करना, उपाध्यायोंकी भक्ति करना, शास्त्र की भक्ति करना, छह आवश्यकोंको कभी न छोड़ना, धर्मकी प्रभावना करना और धर्मात्माओंमें अनुराग रखना ये सोलह भावनाएँ हैं। इनका चितन करनेसे तीर्थंकर प्रकृतिका बंध होता है।

क्यों तीर्थंकर की प्रतिमा पर लगते हैं छत्र, चंवर...!

श्रीफल जैन न्यूज़ पर पढ़िए शास्त्र सम्मत कारण और व्याख्या

भक्तामर के काव्य 31 में कहा है कि "चंद्रमा के समान सुंदर,सूर्य की किरणों के संताप को रोकने वाले तथा मोतियों के समूह से बढ़ती हुए शोभा को धारण करने वाले आपके ऊपर तीन छत्र, मानों आपके तीन लोक के स्वामित्व को प्रकट करते हुए शोभित हो रहे हैं।"

मंदिर को समवसरण का प्रतीक और तीर्थंकर की प्रतिमा को साक्षात तीर्थंकर मानते है और समवसरण में देव 64 चंवर तीर्थंकर की प्रतिमा पर ढूराते है उसी के प्रतीक स्वरूप भगवान के दोनों और एक एक चंवर होते हैं। 64 ऋद्धियों के प्रतीक भी है। कल्याणमंदिर स्तोत्र के काव्य 22 में कहा है कि - "हे समवशरण - लक्ष्मी-सुशोभित जिनदेव ! जब देवतागण समवशरण में आपके उपर चंवर-समूह ढोरतें है तब वे चंवर पहले नीचे की ओर झुकते हैं फिर ऊपर की ओर जाते हैं। वह यह सुचित कर रहें है कि जो भव्य जीव इन जिनवर श्रेष्ठ के - लिए झुककर नमस्कार करते हैं, वे शीघ्र ही ऊपर अर्थात् स्वर्ग-मोक्षादि लक्ष्मी से विभूषित होते हैं।"

ऐसे हैं हमारे वात्सल्य वारिधि जी...

जानिए बाल यशंवत से आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी बनने तक का सफ़र...

किशनगढ़। देश का मध्यभाग, मध्यप्रदेश कई परम संतों की भूमि रही है। मध्यप्रदेश के खरगौन जिले में सनावद में पैदा हुए बालक यशवंत, कैसे संयम,तपस्या के मार्ग पर चलते हुए हमारे वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री 108 श्री वर्धमान सागर जी बन गए। सनावद, ऐसी पावन धरा, जिसमें जैन धर्म को अनेक संतों ने आध्यात्मिकता का अद्भुत माहौल दिया है इसी माहौल के बीच पवित्र नगरी सनावद में पर्युषण पर्व के तृतीय उत्तम आर्जव दिवस पर माता श्रीमती मनोरमा देवी जैन और पिता श्री कमल के घर एक होनहार पुत्र का जन्म हुआ। मगर विधि का विधान ऐसा हुआ कि केवल १२ साल की आयु में आपकी माताजी का असामयिक निधन हुआ। संभवत, यह पहला अवसर था जब आचार्य श्री के मन में वैराग्य भाव का प्रस्फुटन हुआ।

आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज, आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज, तृतीय पट्टाधिश आचार्य श्री धर्म सागर जी महाराज के दर्शन का उनके बाल मन पर प्रभाव पड़ा। सन 1967 में श्री मुक्तागिर सिद्ध क्षेत्र में आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी से आजीवन शूद्र जल त्याग और 5 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत लिया। जनवरी 1968 बागीदौरा राजस्थान में आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया।ग्राम करावली में सर्व प्रथम आचार्य श्री शिव सागर जी के दर्शन किये। सनावद वासियो के साथ श्री गिरनार जी एवम बुंदेलखंड की तीर्थ यात्रा कर। बालक यशवंत वापस सनावद आ गए। सन 1968 को श्री यशवंत पुनः ग्राम पालोदा में आचार्य श्री शिव सागर जी के दर्शन हेतु गए। गृह त्यागमई 1968 से आप संध में शामिल हो गए। भीमपुर जिला डूंगरपुर में आपने द्वियतीय पट्टाधिश आचार्य श्री शिव सागर जी महाराज से गृह त्याग का नियम लिया। बाल ब्रह्मचारी श्री यशवंत जी ने मात्र 18 वर्ष की उम्र में फागुन कृष्णा चतुर्दशी संवत 2025 सन

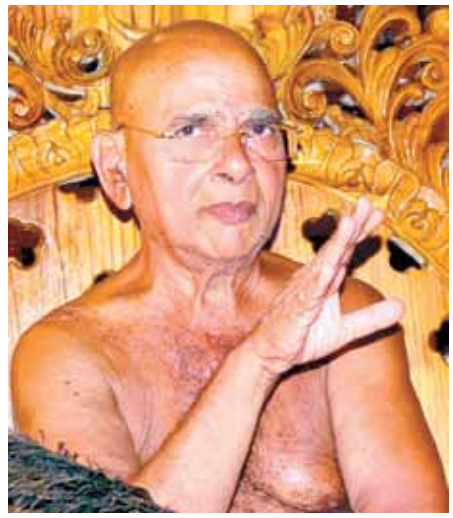

1969 को श्री महावीर जी मे आचार्य श्री शिव सागर जी महाराज को मुनि दीक्षा हेतु श्रीफल चढ़ा कर निवेदन किया। तृतीय पट्टाधिश नूतन आचार्य श्री धर्म सागर जी महाराज ने श्री महावीर जी मे फागुन शुक्ला 8 संवत 2025 24 फरवरी 1969 को 6 मुनि 3 आर्यिका तथा 2 क्षुल्लक कुल 11 दीक्षाएं आपके सहित दी और अब ब्रह्मचारी श्री यशवन्त मुनि दीक्षा धारण कर मुनि श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज बन गए।

जब नव दीक्षित वर्धमान सागर जी नेत्र ज्योति चली गई ...

ज्येष्ठ शुक्ला 5 पंचमी संवत 2025 सन 1969 को अनायास नव दीक्षित मुनि श्री वर्धमान सागर जी महाराज की नेत्रों की रोशनी चली जाती है उस समय उम्र मात्र 19 वर्ष की उसी समय डॉक्टर बुलाये गए अगले दिन डॉक्टरों ने नेत्रों का परीक्षण किया। डॉक्टरों ने परामर्श दिया कि बिना इंजेक्शन लगाए नेत्र ज्योति आना नामुमकिन है। संघ में विचार विमर्श होने लगा कि मात्र 19 वर्ष की उम्र में इतना उपसर्ग क्या किया जावेदीक्षा छेद कर डॉक्टरी इलाज कराने की भी चर्चा चली।

लेकिन मुनि श्री वर्धमान सागर जी महाराज का संकल्प दोहराया कि वे इंजेक्शन नहीं लगवाएँगे। प्रसंग आने पर समाधि ही ले लेंगे। मुनि श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने 1008 श्री चंद्र प्रभु की वेदी पर मस्तक रख कर पूज्य पाद रचित श्री शांति भक्ति का पाठ स्तुति प्रारम्भ की। लगातार 3 दिन अर्थात 72 घण्टे बाद प्रभु भक्ति के प्रभाव से बिना डॉक्टरी इलाज के नेत्र ज्योति वापस आ जाती है। उस घटना के समय आचार्य श्री धर्म सागर जी सहित 17 मुनि 25 आर्यिकाये 4 क्षुल्लक एवम 1 क्षुल्लिका सहित 47 साधु विराजित थे। परमपूज्य आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी जी आकाश गमनी विद्या से आकाश में गमन कर रहे थे सूर्य की प्रचंड तेज रोशनी से आचार्य श्री की नेत्र ज्योति जाने पर श्री पूज्य पाद स्वामी ने श्री शांति भक्ति की रचना कर नेत्र ज्योति वापस पाई थी।उसी पवित्र शांति भक्ति के पाठ से परम पूज्य मुनि श्री वर्धमान सागर जी महाराज की नेत्र ज्योति वापस आई। इन पवित्र नेत्रों से जब गुरुदेव का वात्सल्य मयी आशीर्वाद मिलता है तो भक्तों का मानव जीवन सफल हो जाता है।

वर्धमान सागर जी का मुनि से आचार्य श्री बनने का सफ़र

आचार्य पद चारित्र चक्रवती प्रथमचार्य श्री 108 शांति सागर जी महाराज की अक्षुण्ण पट्टपरम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य श्री 108 अजित सागर जी महाराज के पत्र के माध्यम से लिखित आदेश से पारसोला राजस्थान में 24 जून 1990 आषाढ़ सुदी दूज को गुरु आदेशानुसार आचार्य श्री के पद पर विराजित किया गया।

51 साल से बरस रहा वर्धमान सागर जी का वात्सल्य

किशनगढ़ में गुरुओं की परंपरा को निभाने के मिले अवसर

किशनगढ़। पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी का मदनगंज और किशनगढ़ से 51 वर्षो से संबंध है। 1969 में दीक्षित मुनि श्री वर्धमान सागर जी सबसे पहले अपने दीक्षा गुरु तृतीय पट्टा धीश आचार्य श्री धर्म सागर जी के साथ सन 1971 में किशनगढ़ 15 दिन से अधिक का प्रवास हुआ। तब आचार्य श्री ज्ञान सागर जी के साथ मुनि श्री विद्या सागर जी भी साथ रहे। इसके बाद सन 1977 का चातुर्मास आपने आचार्य श्री संघ के साथ किया।सन1984 में 1008 श्री मुनिसुब्रत नाथ भगवान के पंच कल्याणक हेतु दीक्षा गुरु आचार्य श्री धर्म सागर जी के साथ आए। तब दोआर्यिका माताजी की समाधि भी हुई थी।

सन 1987 में आचार्य श्री मुनि अवस्था में मुनि श्री निर्मल सागर जी के साथ आए थे, तब आपने 150 प्रतिमाओं को सूरी मंत्र भी दिया था।वर्ष 1990 में आचार्य बनने के बाद सन 1998 में आपने किशनगढ़ में चातुर्मास किया।उस समय आर्यिका श्री समता मति माताजी की समाधि किशनगढ़ में हुई।आचार्य श्री किशनगढ़ से बस्सी गए फिर पुनः 1998 में किशनगढ़ वापस आए। सन 1999 में आचार्य श्री जयपुर से किशनगढ़ संघस्थ अस्वस्थ शिष्य श्री अपूर्व सागर जी को देखने के लिए किशनगढ़ आए और किशनगढ़ समाज की बगैर मांगे मन चाही मुराद पूरी हुई और किशनगढ़ समाज को आचार्य श्री सानिध्य में महावीर जयंती मनाने का सौभाग्य मिला।पुनः वर्ष 1999 में आचार्य श्री अजमेर से किशनगढ़ आए और 7 दिन का शिविर भी आयोजित हुआ। सन 2014 में आचार्य पद के 25 वे वर्ष के उपलक्ष्य में रजत कीर्ति महोत्सव मनाया गया।

सन 2015 में आपने सात दीक्षाएं दी जिनमें 1 मुनि, 4 आर्यिका तथा 2 क्षुल्लक दीक्षा शामिल है। इस प्रकार वर्ष1971, 1977, 1984, 1987, 1998, 1999, 2014, 2 015 के बाद पूर्णांक 9 वी बार वर्ष 2023 में 18 जनवरी को प्रवेश किया। इन वर्षो में आचार्य श्री अनेक बार किशनगढ़ आए हैं। संभवत किशनगढ़ एक मात्र नगर है, जहां आचार्य श्री का सर्वाधिक बार शुभ आगमन हुआ है।

श्रीफल जैन न्यूज़ पर पढ़िए विमल बड़जात्या के विचार

व्यापार मंडल, कार्यकारिणी सदस्य हैं विमल

विमल बड़जात्या जी ने कहा कि किशनगढ़ में जैन समाज के लिए एक सुनहरा अवसर है। दो मंदिरों में पंचकल्याणक महोत्सव होना था। लेकिन जैन समाज के देश के बड़े संत वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के सानिध्य में दो मंदिरों का एक साथ पंचकल्याण होना जैन समाज के लिए अनूठा अवसर बन गया। आचार्य वर्धमान सागर जी के बारे में विमल बड़जात्या ने कहा कि उनके बारे में क्या बोला जाए जो स्वयं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति हैं। जब भी उनका सानिध्य मिलता है वात्सल्य भाव इस तरह उनसे निःसृत होता है कि आप उनके सानिध्य से कभी दूर नहीं हो सकते।

SCAN ME

इस QR Code को स्कैन कर जुड़ें श्री फल जैन न्यूज़ की website से